Roll No. ..... Total Pages : 4

5385-A4

M.A. (Final) Examination, 2016

HINDI LITERATURE

Paper–V

(रचनाकार का विशेष अध्ययन)

(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

(खण्ड–अ) [Marks : 20

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड–ब) [Marks : 50

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड–स) [Marks : 30

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड–अ

इकाई–I

1. (क) भारतेन्दु रचित प्रहसन 'अँधेर नगरी' का रचना काल लिखिए।

(ख) भारतेन्दु द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका का नाम लिखिए।

इकाई–II

(ग) भारतेन्दु द्वारा अनुदित नाटक का उल्लेख कीजिए।

(घ) 'भारत दुर्दशा' नाटक की मूल संवेदना क्या है?

इकाई–III

(ङ) भरतमुनि के ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' के अनुकरण पर भारतेन्दु ने किस ग्रन्थ की रचना की?

(च) भारतेन्दु का वह नाटक जिसमें काशी की तत्कालीन स्थिति का यथार्थ चित्रण है- नाम लिखिए।

इकाई–IV

(छ) भारतेन्दु ने अपने किस नाटक को 'लास्यरूपक' की संज्ञा दी?

(ज) 'अँधेर नगरी' प्रहसन कितने दृश्यों में गठित रचना है?

इकाई–V

(झ) भारतेन्दु द्वारा रचित हिन्दी निबन्ध संग्रह का नाम लिखिए।

(ञ) ''चूरन साहब लोग जो खाता।
सारा हिन्द हजम कर जाता।''
पंक्तियाँ किस रचना से ली गई हैं?

खण्ड–ब

इकाई–I

2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का आधुनिक हिन्दी गद्य में स्थान निर्धारण कीजिए।

3. भारतेन्दु की गद्य शैली की प्रमुख विशेषताओं की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

इकाई–II

4. नाट्य शिल्प की दृष्टि से 'अँधेर नगरी' प्रहसन की समीक्षा कीजिए।

5. 'अँधेर नगरी' प्रहसन की भाषा शैली पर निबन्ध लिखिए।

इकाई–III

6. भारतेन्दु के प्रमुख निबन्ध संग्रहों का उल्लेख करते हुए उनके निबन्धों की भाषा शैली की विवेचना कीजिए।

7. हिन्दी निबन्ध विधा में भारतेन्दु के योगदान का उल्लेख कीजिए।

इकाई–IV

8. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हिन्दी पत्रकारिता को देन पर निबन्ध लिखिए।

9. ''हिन्दी गद्य के जनक भारतेन्दु'' विषय पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

इकाई–V

10. भारतेन्दु की नाट्यकला को संक्षेप में लिखिए।

11. 'भारत दुर्दशा' नाटक का उद्देश्य एवं प्रासंगिकता संक्षेप में लिखिए।

खण्ड–स

इकाई–I

12. ''भारतेन्दु के नाटक युगीन समस्याओं को जनता तक पहुँचाने के माध्यम थे।'' कथन की युक्तियुक्त समीक्षा कीजिए।

इकाई–II

13. ''भारतेन्दु के निबन्ध विषय एवं शैली की दृष्टि से विविधतापूर्ण हैं।'' कथन को भारतेन्दु के निबन्धों के आलोक में समझाइए।

इकाई–III

14. हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेन्दु का स्थान निर्धारण कीजिए।

इकाई–IV

15. नाटकीय तत्त्वों के आधार पर 'भारत दुर्दशा' नाटक की समीक्षा कीजिए।

इकाई–V

16. भारतेन्दु की प्रमुख गद्य रचनाओं का उल्लेख करते हुए हिन्दी नाटकों में उनकी देन समझाइए।